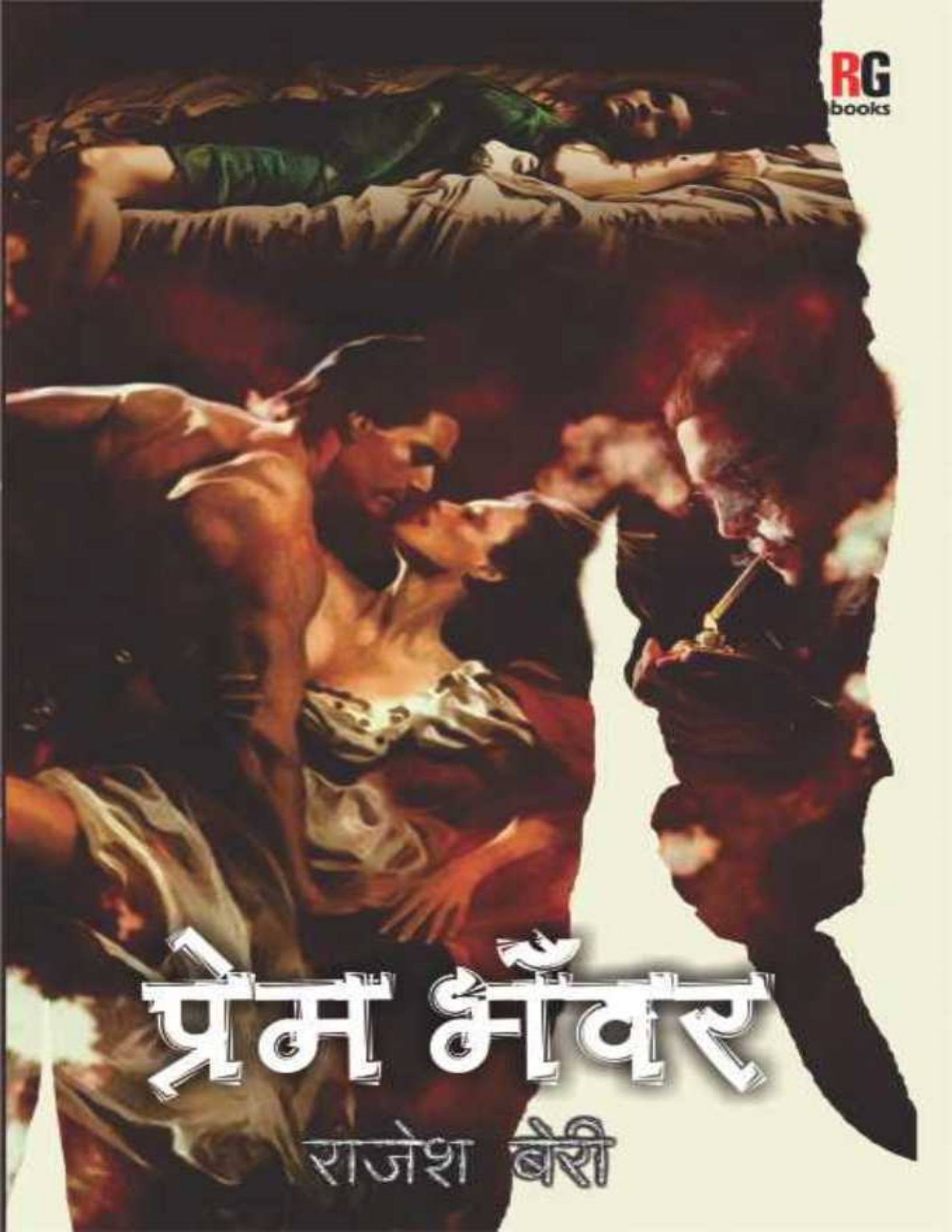
RG
books
प्रेम भँवर
राजेश बेरी

प्रेम भँवर

राजेश बेरी

REDGRAB books

Title: Prem Bhavar
Author: Rajesh Beri

Published By
Redgrab books Pvt. Ltd.
942, Mutthiganj, Prayagraj, 211003
www.redgrabbooks.com
contact@redgrabbooks.com

Printed and bound in Manipal Technologies Limited, Manipal, Karnataka
Paperback, Second Ed. published by Redgrab Books Pvt. Ltd. in 2022

Copyright © Rajesh Beri 2022
Printing rights reserved : Redgrab Books Pvt. Ltd., 2022
Cover design and Typeset in Redgrab Books arts

The author asserts the moral right to be identified as the author of this work

This book is entirely a work of fiction and has no resemblance to any person or thing, living or dead. If found any, that will be purely coincidental. I have mentioned several places in Rampur but do not claim it to be exactly the way I have described. These places may or may not exist. There are no intentions to hurt any individual or group through this story. Its sole purpose is to entertain its audience.

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, and including photocopying, recording, or by any information storage and retrieval system, without the written permission of the Publisher, except where permitted by law.

प्यारे पाठकों को समर्पित

प्रस्तावना

पूजा की शक्ल देखने वाली थी। वो तो बिंदु चाची की पहली रात की संभोग की बातें सुनकर शर्म से लाल हुए जा रही थी। उसने हँसते हुए अपने कानों में उँगली घुसाते हुए कहा-

"बस करो चाची नहीं सुननी मुझे ये बातें.. छी!" कि बिंदु चाची ने उसके कानों से उसके हाथ नीचे करते हुए कहा, "क्यों नहीं सुननी ये बातें? शादी हो रही है तेरी.. सुहागरात पर पति जब तेरे नज़दीक आकर तुझसे ऐसी बातें करेगा, तब भी यही कहेगी?... नहीं मुझसे ऐसी बातें मत करो, मुझे मत छुओ, मुझे अच्छा नहीं लग रहा छी..."
इस पर पूजा ने हिचकिचाते हुए कहा-

"चाची... मुझे सेक्स की बात करते हुए शर्म आती है।" बिंदु चाची ने सीरियस होते हुए कहा-

"देख पूजा एक सुखी विवाहित जीवन के लिए सेक्स सबसे ज़रूरी चीज़ है। ज़्यादातर जोड़े इस मुद्दे को डिस्कस ही नहीं करना चाहते और फिर आगे चलकर एक ऐसी समस्या के साथ लड़ते हैं जो उन्हें दिखती ही नहीं। हमारे देश में तलाक़ की ज़्यादातर यही वजह होती है, सेक्स! इसीलिए मैं चाहती हूँ कि तू उन बातों को बारीकी से समझे कि सुखद और सफल शादी का एक ही मूल मंत्र है और वो है अपने पार्टनर की शारीरिक तृप्ति। शारीरिक तृप्ति होगी तो मानसिक संतुलन बना रहता है। याद रखना हर लड़का शादी से पहले सिर्फ़ एक ही सपना लेकर आता है कि उसकी पत्नि सुंदर हो।" पूजा ने शर्माते हुए चाची की बात काटते हुए कहा-

"सुंदर तो मैं हूँ ही!

"वैसे तेरे हिसाब से सुंदरता की परिभाषा क्या है?"

"यही कि लड़की अच्छी दिखे, अच्छी बोलचाल हो, अपने ससुराल वालों की इज़्ज़त करे।" बड़ी मासूमियत से उसने चाची से ये बात कह दी थी और उम्मीद कर रही थी कि चाची उसकी इस बात पर उसे शाबाशी देंगी पर उसकी सोच के विपरीत चाची ने मुँह बनाकर उससे पूछा-

"किसने सिखाया है तुझे ये सब?" पूजा ने मासूमियत भरे स्वर में कहा- "मम्मी ने।" बिंदु चाची उसके क़रीब आ गयी और कहने लगी, "लड़की की सुंदरता की परिभाषा होती है उसके अंगों का सुंदर आकार। जैसे कि लम्बे मख़मली बाल, बड़ी-बड़ी बोलती आँखें, आमंत्रण देते रसीले होंट, अपनी ओर ध्यान खींचते ये बड़े वक्ष और जगह-जगह से झाँकता हुआ गोरा बदन और चाल तो ऐसी कि सर से लेकर हर अंग अपनी ही कहानी कह रहा हो।"

सुंदरता की ऐसी परिभाषा की पूजा ने तो कभी कल्पना भी नहीं की थी। चाची ने उसका ध्यान तोड़ते हुए आगे कहा, "इसीलिए तो लड़की को शादी से पहले हल्दी का उबटन लगाया जाता है, जिससे उसका अंग-अंग चमक जाये, खिल उठे। जब वो निर्वस्त्र होकर अपने पति के समक्ष जाये तो उसके बदन की ख़ुशबू उसके पति को उत्तेजित करके उसे अपनी पत्नि के बदन को छूने के लिए प्रेरित करे। अरे क़ुदरत ने तो स्त्री का सर से लेकर पाँव तक शृंगार का स्वरूप बनाकर धरती पे भेजा है।

चाची के मुँह से ऐसी बातें सुनकर तो पूजा का मुँह खुला का खुला रह गया। तब बिंदु चाची ने पूजा को शीशे के सामने खड़ा कर दिया। उसके बदन से उसके दुपट्टे को खिसका दिया और उसके वक्षों को दिखाते हुए बोलीं-

"ये देख इन वक्षों को ध्यान से देख। इनका ऐसा उभार क्यों है? ताकि पुरुष इन्हें देखकर आकर्षित हो, ये क़ुदरती है पूजा। इन वक्षों के उभार को देखकर ही पुरुष की उत्तेजना उजागर होती है और वही उत्तेजना स्त्री की चाहत बनती है। इसे हम प्यार कहते हैं।"

बड़े आत्मविश्वास से चाची पूजा को ये ज्ञान दे रही थी। उसने पूजा के शर्म से हो रहे लाल चेहरे को देखते हुए कहा-

"ये सब क़ुदरती होता है पूजा और ये अनुभव तो हर लड़का लड़की की ज़िन्दगी में आना ही है। इससे कोई नहीं भाग सकता, तू भी नहीं।" पूजा अब बिंदु चाची की बातों को ध्यान से सुन रही थी। वो महसूस कर रही थी कि चाची अपने अनुभव से उसे ऐसा ज्ञान दे रही थीं जो उसने किसी से नहीं पाया था पर बहुत ज़रूरी था। चाची ने पूजा की बढ़ती हुई उत्सुकता को देख आगे बोलना शुरू किया-

"हमारे पूर्वजों ने तो गुप्त ज्ञान और कामसूत्र पर शास्त्र लिखे हैं और हम ही उन्हें ग्रहण करने से कतराते हैं। क़ुदरत ने इन्सान को शारीरिक सुख भोगने के लिए इस धरती पर भेजा है जो सिर्फ़ संभोग से प्राप्त होता है और यही सुख आत्मा की तृप्ति करता है। स्त्री और पुरुष के संभोग से ही एक स्त्री अपनी कोख भरती है, जिससे सृष्टि चलती है। तो फिर स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के बारे में बात करने से कतराना कैसा?"

पूजा अब तक शर्म से लाल हो चुकी थी, उसने हँसते हुए कहा, "पर चाची एक डर-सा बैठा हुआ है मन में कि कैसे होगा पहला अनुभव? प्रेम मेरे साथ क्या करेगा? क्या वो मेरे कपड़े उतारेगा? सोचकर ही काँप जाती हूँ।" चाची ने मुस्कुराते हुए कहा-

" इसीलिए तो तुझे समझा रही हूँ.. लाडो। देख जैसे मैं तुझे समझा रही हूँ ना, उसे भी तो कोई ना कोई ये ज्ञान दे रहा होगा.. तो कहीं ऐसा न हो हमारी पूजा पहली जंग ही हार जाये। देख सबसे पहले ये समझ ले कि एक जवान ख़ूबसूरत लड़का जैसा तेरा प्रेम है, उसके मन में तुझे छूने की लालसा जागेगी। उसके लिए तेरे हर अंग को देखना, उसे महसूस करना, एक नये सुख के आविष्कार से कम नहीं होगा। वो अपनी कल्पनाओं को साकार

करने के लिए तेरे होंट तेरी आँखें फिर तेरे वक्ष, सब कुछ.. यानी सर से लेकर पाँव तक.. सबकुछ महसूस करना चाहेगा और तब तुझे उसकी इस खोज पर खरा उतरना है। जब वो तेरे अंग-अंग को छूए तो उसे अपनी जीत का एहसास होना चाहिए। उसके लब तुझे चूमना चाहें तो अपने लब समर्पित कर देना क्योंकि तुम दोनों के होंटों से जो प्रेम रस का आदान-प्रदान होगा वही शुरूआत होगी एक-दूसरे में अपने भाव भरने की। वो तेरे बदन के हर कोने को दबाना चाहे तो उसे आश्वासन देना कि ये सब उसका ही है, जो चाहे करे। तभी तो उसका अली बाबा जागेगा और तेरी सिम-सिम में प्रवेश करके तुझे असीम सुख देगा और जब वो प्रेम भरा विस्फोट तेरे अंदर होगा ना, तब तू जानेगी कि असली क़ुदरती सुख की परिभाषा क्या है! यही सृष्टि का सुझाया पहला और आत्मिक सुख है जिसे तुझे पाना है। इस इस विषय की चर्चा करने में कोई शर्म नहीं क्योंकि यही प्रेम है।"

कहानी

गोवा के पणजिम शहर के पुलिस स्टेशन में सुबह ८ बजे की हलचल थी। रात के स्टाफ़ की ड्यूटी ख़त्म हो रही थी लिहाज़ा मॉर्निंग स्टाफ़ के साथ हैन्डिंग ओवर की प्रक्रिया चल रही थी। थाना इंचार्ज दलबीर सिंह जिसकी उम्र लगभग ३५ साल की थी, क़द ६ फ़ीट, रंग गेहूँआ। अपने रिलीवर का इंतज़ार कर रहा था।

ये रात भी बिना किसी जुर्म के कट गयी। कोई वारदात नहीं हुई थी। इस बात की तसल्ली के साथ वो चाय की चुस्कियाँ ले रहा था कि अचानक कंट्रोलरूम का फ़ोन लम्बी घंटी के साथ बज उठा। वहाँ खड़े सभी पुलिसकर्मी चौंक गये। कंट्रोल का फ़ोन एक ऐसा फ़ोन था जिसकी घंटी कोई भी नहीं सुनना चाहता था।

दलबीर ने हाथ बढ़ाकर फ़ोन उठा लिया-

"हैलो पंजिम पुलिस स्टेशन, SHO दलबीर सिंह।" दलबीर ने कंट्रोल से कुछ आदेश लिये और हरकत में आ गया। उसने अपनी टोपी उठायी और स्टाफ़ को आवाज़ लगाते हुए कहा-

"जल्दी चलो.. होटल मून लाइट.." अगले ही पल पुलिस की वैन अपना परिचित सायरन बजाते हुए गोवा की सड़कों पर दौड़ रही थी। जिसमें तीन हवलदार और दो लेडी कांस्टेबल भी थीं। मामला गंभीर लग रहा था। दलबीर ने वक़्त बर्बाद न करते हुए रास्ते में ही डिटेक्टिव प्रदीप को फ़ोन लगा दिया।

प्रदीप जिसकी उम्र ४० के आस पास रही होगी। सर पे हल्के घुँघराले बाल। हर काम धीमी गति से करने की जिसकी आदत है। यहाँ तक कि बात भी उसी गति से करता है। उसने सुबह की पहली उबासी लेते हुए पूछा-

"बोलिये दलबीर जी सुबह-सुबह मेरी याद कैसे आ गयी।

दलबीर जो अभी भी अपनी जीप में होटल मून लाइट की तरफ़ बढ़ रहा था उसने मुस्कुराते हुए कहा-

डिटेक्टिव प्रदीप अभी-अभी एक वारदात हुई है होटल मून लाइट में, वहीं जा रहा हूँ। सोचा आप इस केस में इंट्रेस्टेड होंगे तो फ़ोन कर दिया।"

प्रदीप- "क्या हुआ है?"

दलबीर- "मर्डर! एक नहीं दो-दो ..हनीमून कपल था।" इतना सुनकर प्रदीप की नींद हवा हो गयी।

"रियली? साउंड्स वीयर्ड! ठीक है मैं पहुँचता हूँ।" कहते ही वो बाथरूम में घुस गया। उधर होटल मून लाइट की तीसरी मंज़िल के कमरा नंबर ३२२ के बाहर होटल के स्टाफ़ की भीड़ जमा थी। तभी इंस्पेक्टर दलबीर को अपनी टीम के साथ वहाँ पाकर, वहाँ के मैनेजर परेरा ने सबको पीछे कर दिया और दलबीर को रास्ता दिखाते हुए रूम नंबर ३२२ में ले

गया। दलबीर वो नज़ारा देखकर चौंक गया। वहाँ ज़मीन पर एक लड़का जिसकी उम्र लगभग २८ साल की रही होगी, सर से ख़ून बहकर सूख गया था। हाथ में चाक़ू था जो ख़ून से सना हुआ था। ये प्रेम है। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसने इस चाक़ू से उस लड़की का क़त्ल कर दिया है जिसकी लाश सामने ही बैड पर पड़ी थी। दलबीर ने नज़दीक जाकर देखा, बैड पर एक ख़ूबसूरत लड़की की लाश पड़ी थी। ये पूजा थी। बदन से काफ़ी ख़ून बहने से पूरा का पूरा बिस्तर ख़ून से भरा हुआ था। दलबीर ने परेरा की तरफ़ रुख़ करते हुए पूछा-

"कौन हैं ये लोग?"

परेरा- "सर इस लड़के का नाम प्रेम शर्मा है और ये इसकी पत्नि पूजा शर्मा। हनीमून के लिए आये थे यहाँ। दो दिन पहले ही इन्होंने इस होटल में चेक इन किया था और आज सुबह जब हाउस कीपिंग वाला राउंड पर आया तो उसने रूम नंबर ३२२ में इन दोनों की लाश देखी... फ़ौरन मैंने १०० नंबर पर फ़ोन कर दिया।" दलबीर ने हवलदार को दोनों लाशों का मुआयना करने को कहा और ख़ुद परेरा के साथ बाहर आ गया।

दलबीर अभी परेरा से पूछताछ कर ही रहा था कि दलबीर ने देखा डिटेक्टिव प्रदीप भी वहाँ पहुँच चुका था। सर पर एक भूरे रंग की हैट और उससे मैचिंग लम्बा कोट। दलबीर ने उसे आधी ही बात बतायी थी पर प्रदीप पूरी बात समाझ गया था। यही तो उसकी ख़ासियत थी कि वो इन्सान की चाल देखकर बता देता था कि वो कहाँ से आया है और कहाँ को जायेगा। वक़्त बर्बाद ना करते हुए उसने दलबीर के साथ रूम नंबर ३२२ का रुख़ किया। जहाँ पुलिस टीम वारदात के सारे सबूत इकठ्ठा कर रही थी। प्रदीप ने पूजा की लाश को ग़ौर से देखा जिसकी उम्र २५-२६ के आस पास थी। निहायत ख़ूबसूरत, रंग गोरा। प्रदीप ने तो आँखों से ही उसका क़द नाप लिया ५" ७' और फिर प्रेम की लाश को जिसका रंग गोरा था, वर्ज़िशी बदन, देखने में किसी अच्छी फ़ैमिली से लग रहे थे दोनों।

दलबीर- "मुझे तो कोई आपसी झगड़े का मामला लगता है। शायद एक्स्ट्रा मैरिटल अफ़ेयर का चक्कर। हाल में कुछ मामले आये हैं मेरे सामने कि शादी के बाद लड़कियाँ अपने पुराने बॉयफ़्रेंड्स से मिलती हैं जिससे उनके पतियों को तकलीफ़ होती है या लड़के को उसकी एक्स-गर्लफ़्रैंड मिलने आती है और पत्नि को पता चल जाता है। प्रदीप ने ग़ौर से दोनों लाशों को देखते हुए कहा, "पोस्सीबल है.." पर अब इस बात की पुष्टि करने के लिए दोनों में से कोई ज़िन्दा नहीं है! अब तो हमें उन सुबूतों पर निर्भर होना पड़ेगा जो यहाँ मिलेंगे या फिर वही पोस्टमोर्टम रिपोर्ट, CCTV फ़ुटेज। आप एक काम कीजिये लाशों को पोस्टमोर्टम के लिए भिजवाइये, CCTV फ़ुटेज चेक करवाइये फिर देखते हैं।" कहते हुए उसने अपनी सिगरेट निकाली और उसे सूँघता हुआ बाहर कॉरिडोर में आ गया।

पुलिस टीम के लोग, प्राथमिक औपचारिकता के बाद दोनों लाशों को स्ट्रेचर पर ले जा रहे थे। दलबीर परेरा से पूछताछ करने लगा। प्रदीप जेब से लाइटर निकालकर सिगरेट जालाने

लगा कि अचानक सिगरेट जलाते हुए प्रदीप की नज़र ज़मीन पर गयी। उसने पाया कि कुछ ख़ून की बूँदें कॉरिडोर में गिरी हुई हैं। उसने वहीं से आवाज़ लगाकर उन लोगों को रोक दिया जो इन लाशों को ले जा रहे थे।

प्रदीप-"ऐ ... एक मिनट रुको.." और भागता हुआ पूजा और प्रेम की लाश के पास आ गया। उसकी ये हरकत देख दलबीर भी चौंक गया। प्रदीप ने ग़ौर से देखा के ख़ून की बूँदें प्रेम की लाश से टपक रही थीं। उसने फट से अपने कोट की जेब से रबर का दस्ताना निकालकर पहना और प्रेम की गर्दन पर हाथ रख कर उसकी नब्ज़ देखने लगा। दलबीर भी ये नज़ारा देखकर हैरान था। प्रदीप ने तब सबको ये कहकर चौंका दिया-

"ये लड़का ज़िन्दा है! दलबीर जी जल्दी एम्बुलेंस बुलवाइए।" प्रदीप की बात सुनकर दलबीर हरकत में आ गया उसने एक हवलदार को इशारा किया और वो हवलदार अपना फ़ोन निकालकर काम पे लग गया।

दलबीर- "आपको कैसे शक हुआ कि ये ज़िन्दा है?"

प्रदीप- "इसकी बॉडी का ख़ून अभी सूखा नहीं है, जबकि इस लड़की की बॉडी का ख़ून सूख चुका है।" कहते हुए उसने अपनी सिगरेट जला दी। दलबीर भी कॉरिडोर में प्रेम के बदन से टपकी इक्का-दुक्का ख़ून की बूँदों को देख रहा था। इतनी बारीक नज़र रखता है डिटेक्टिव प्रदीप, इसीलिए तो दलबीर भी उसे मानता है।

कुछ ही पलों में एम्बुलेंस होटल के आहाते में आ गयी और पूजा की लाश को मुर्दाघर में और प्रेम को इलाज के लिए हॉस्पिटल भेज दिया गया। अगले ही पल दलबीर और प्रदीप होटल मून लाइट के रेस्टोरेंट में बैठे चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे। होटल का मैनेजर अपना रजिस्टर लेकर दलबीर को उपयुक्त जानकारी दे रहा था। दलबीर ने मैनेजर से पूछा-

"ये दोनों ३२२ में कब से रुके हैं?" कि मैनेजर परेरा ने प्रदीप को ये कह कर चौंका दिया-

"नही सर ये दोनों प्रेम शर्मा और उनकी पत्नी पूजा शर्मा तो ३२० नंबर रूम में रुके थे। ये रूम तो कल तक नेहा पाण्डेय नाम की लड़की के नाम से बुक था।"

"नेहा पाण्डेय?" इस केस में नया नाम सुनकर प्रदीप ने हैरानी से दलबीर की ओर देखा। दलबीर जानता था कि उसे क्या करना है, उसने फट से मैनेजर से कहा-

इस वक़्त नेहा पाण्डेय कहाँ मिलेगी? उसका कोई फ़ोन नंबर?" मैनेजर रजिस्टर पलटकर उसे नेहा पाण्डेय की सारी इन्फ़ोर्मशन देने लगा।

उधर गोवा एयरिपोर्ट पर अनायुन्स्मेंट हो रही थी, "मिस नेहा पाण्डेय जो गो एयर की उड़ान संख्या GA 563 से दिल्ली जा रही हैं, उनके लिए ये फ़ाइनल कॉल है। कृपया बोर्डिंग के लिये प्रस्थान करें।" कि अचानक वहाँ बैठी एक ख़ूबसूरत लड़की की ये आवाज़ सुनकर नींद खुली। ये नेहा थी। रंग गोरा उम्र लगभग २४ साल, सर पे हल्के घुँघराले बाल। किसी मॉडल से कम नहीं लग रही थी। उसे एहसास हुआ कि नींद के कारण उसकी फ़्लाइट छूटने

वाली थी। उसने तो अभी सिक्यूरिटी चेक भी नहीं किया था। बस हाथ में बोर्डिंग पास पकड़े सो गयी थी। उसने अपना एक हैण्ड बैग हाथ में लिया और ट्राली बैग को घसीटते हुए सिक्यूरिटी चेक इन काउंटर की तरफ़ दौड़ने लगी।

"हट जाइये... प्लीज़ मेरी फ़्लाइट छूट जायेगी... प्लीज़ रास्ता दीजिये।" वो दौड़ते हुए सभी से आग्रह कर रही थी, पर वो जैसे सिक्यूरिटी चेक इन काउंटर पर पहुँचने वाली थी कि उसका फ़ोन बज उठा। उसने देखा कि ट्रू कॉलर पर गोवा पुलिस फ़्लैश हो रहा था। नेहा हैरान हुई कि गोवा पुलिस का फ़ोन उसे क्यों आ रहा है? उसने झट से फ़ोन उठाया-

"हैलो, कौन?" दूसरी ओर होटल मून लाइट के रिसेप्शन से दलबीर परेरा के साथ खड़ा था। जिसने रजिस्टर में नेहा का नंबर देखकर अपने मोबाइल से उसे फ़ोन लगाया था।
दलबीर- "मिस नेहा मैं इंस्पेक्टर दलबीर बोल रहा हूँ, गोवा पुलिस। आपसे ज़रूरी बातचीत..." नेहा ने उसकी बात काटते हुए कहा-

"देखिये आपको जो भी बात करनी है ५ मिनट के बाद कीजिये प्लीज़, मेरी फ़्लाइट छूट जायेगी।" दलबीर ने सख़्ती से जवाब दिया-

"आप कहीं नहीं जा रहीं, आप होटल मून लाइट के जिस कमरा नंबर ३२२ में ठहरी थीं उसमें एक ख़ून हो गया है.."
नेहा- "ख़ून? किसका?"
दलबीर- " एक लड़की का.... नाम है पूजा... हेलो! हेलो, मिस नेहा आप सुन रही हैं?" नेहा को तो काटो ख़ून नहीं, वो सुन रही थी कि उसके नाम की अनाउंसमेंट बार-बार हो रही है।

नेहा- "जी हाँ.." दलबीर ने आगे लगभग उसे चेतावनी देते हुए कहा-

"आप इसी वक़्त अपनी फ़्लाइट कैंसिल करवाकर होटल मून लाइट पहुँचिए, वर्ना आपको यहाँ बुलवाने के लिए हमें दिल्ली पुलिस की मदद लेनी पड़ेगी..." नेहा ने ख़ुद को सँभालते हुए कहा-

"हाँ... मैं आ रही हूँ वापस.." उसकी आँख भीगने लगी थी, गला भर रहा था।
दलबीर- "थैंक्स.. क्या आप जानती थीं इस लड़की को?" नेहा ने एक छोटा-सा विराम लेते हुआ कहा-

"जी हाँ! पूजा मेरी बड़ी बहन है।" इसके आगे तो नेहा के सर के ऊपर से उड़ते हवाई जहाज़ के शोर में कुछ सुनायी नहीं दिया कि नेहा और दलबीर में क्या बातचीत हुई।
प्रदीप अब दलबीर के पीछे होटल मून लाइट के रिसेप्शन पर आ चुका था। प्रदीप ने दलबीर की आँखों में हैरानी भरे भाव पढ़ते हुए पूछ लिया-

"क्या हुआ?"

दलबीर- "३२२ नंबर रूम में जहाँ पूजा का क़त्ल हुआ, वो उस रूम में नहीं बल्कि ३२० में अपने पति के साथ ठहरी हुई थी।"

प्रदीप- "तो फिर इस रूम में कौन ठहरा था?"

दलबीर- "पूजा की छोटी बहन...नेहा पाण्डेय।" ये सुनकर तो प्रदीप भी चौंक गया, उसके चेहरे पर एक चमक थी कि केस इंट्रेस्टिंग होने वाला था।

दलबीर- "मुझे तो लगता है दो बहनों के झगड़े का मामला है।" प्रदीप ने दलबीर की बात काटते हुए कहा-

"बहुत जल्दी रहती है आपको केस क्लोज़ करने की दलबीर जी। आपको क्लूज़ मिले हैं, सबूत नहीं। सब्र कीजिये अभी तो कहानी शुरू हुई है। अभी तो किरदारों ने कहानी में आना शुरू किया है। अभी तो कई किरदार आने बाक़ी हैं।" अपने परिचित अंदाज़ में मुस्कुराते हुए उसने जेब से सिगरेट निकाली और उसे सूँघता हुआ वहाँ से निकल गया। दलबीर जनता था कि बहुत मेहनत करवाने वाला था प्रदीप उससे, पर वो उसके लिए तैयार था। क्योंकि वो जनता था बेशक वक़्त लेता है डिटेक्टिव प्रदीप पर जुर्म की जड़ तक पहुँचता है कि अचानक एक हवलदार ने दलबीर को आकर बताया कि नेहा पाण्डेय होटल पहुँच रही है।

दलबीर- "ठीक है परेरा से कहो कुछ वक़्त के लिए उनका कॉफ़्रेंस हॉल हम इस्तेमाल करेंगे।" वो हवलदार से बात करते हुए होटल के मेन गेट पर पहुँच गया। उसने देखा कि प्रदीप उससे पहले ही वहाँ मौजूद था। वो रह-रहकर अपनी घड़ी देख रहा था। दलबीर हैरान था कि प्रदीप किसका इंतज़ार कर रहा है! कि तभी वहाँ एक टैक्सी आकर रुकी और उसमें से उतरी नेहा पाण्डेय। उसके हाव भाव देखकर प्रदीप पहचान गया कि यही नेहा है और दलबीर भी जान गया कि प्रदीप नेहा का ही इंतज़ार कर रहा था। प्रदीप ने आगे बढ़कर नेहा की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया-

"आप मिस नेहा पाण्डेय हैं? हाय! आई एम डिटेक्टिव प्रदीप और ये इंस्पेक्टर दलबीर इन्होंने आपको फ़ोन किया था।" नेहा वहीं खड़े-खड़े रो दी।

"क्या हुआ पूजा को? कहाँ हैं वो मुझे उसे देखना है।"

दलबीर- "उनकी बॉडी को पोस्टमोर्टेम के लिए ले गये हैं, आप अंदर चलिये, अंदर बैठकर बात करते हैं।" कहते हुए उसने शिष्टाचार का परिचय देते हुए नेहा का बैग ख़ुद पकड़ लिया।

होटल मून लाइट के कॉफ़्रेंस हॉल में परेरा ने सारा इंतज़ाम कर दिया था। जहाँ नेहा अब बीच में एक कुर्सी पर बैठी थी। उसके आँसू बहकर सूख चुके थे और सामने दलबीर बैठा था। प्रदीप दूर कोने में उस वार्तालाप के शुरू होने का इंतज़ार कर रहा था जो अब दलबीर और नेहा के बीच होने वाली थी।

नेहा ने पानी पीकर टेबल पर ख़ाली गिलास रखकर दलबीर से पूछा-

"क्या मेरे घरवालों को पता है कि पूजा..?" दलबीर ने उसकी बात को काटते हुए कहा-

"उनको भी फ़ोन कर देंगे पर कुछ सवाल पहले आपसे पूछना चाहता हूँ। ये तो आपने बता दिया कि पूजा आपकी बहन थी और प्रेम आपका जीजा। वो लोग हनीमून के लिए यहाँ आये थे, पर सवाल मेरा ये है कि आप इन दोनों के हनीमून के बीच क्या कर रही थीं? वो भी उनके ही होटल में और उनके बग़ल वाले कमरे में?" दलबीर के इस सवाल का जवाब ना देते हुए नेहा ने दलबीर को ही पूछ लिया-

"मेरे जीजा जी.. प्रेम शर्मा कहाँ है?" दलबीर ने एक बार प्रदीप को देखा, "वो हॉस्पिटल में हैं.. उनका इलाज चल रहा है!"

पूजा- "क्या हुआ प्रेम को?"

"वो भी उसी कमरे में बुरी तरह ज़ख़्मी हालत में हमें मिले जहाँ आपकी बहन की लाश। उनके हाथ में एक चक्कू था जिससे शायद पूजा का.." कहते हुए वो रुक गया।

नेहा- "मतलब! प्रेम ने पूजा को मार दिया...?"

दलबीर- "फ़िलहाल हम कुछ नहीं कह सकते, कि प्रेम ने पूजा को मारा या फिर दोनों को किसी तीसरे ने?" कहते हुए उसने नेहा पर अपनी तीखी नज़र गाड़ दी। दलबीर की बात सुनकर नेहा चौंक गयी। उसके मुँह से अचानक निकल गया-

"ये कैसे हो सकता है, मैं सबकुछ तो ठीक करके गयी थी!" दलबीर ने नेहा के इस वाक्य को अपने अगले सवाल का आधार बनाते हुए पूछा-

"क्या ग़लत था दोनों के बीच जो तुम ठीक करके गयी थीं? बोलो नेहा!" नेहा अब अपनी बात कहकर घबरा गयी थी। वो अब दलबीर की किसी भी बात का जवाब नहीं देना चाहती थी।

"देखिये पहले आप मेरे घरवालों को इन्फ़ॉर्म कर दीजिये.." दलबीर ने उसकी बात को काटते हुए कहा-

"यही सवाल तो तुम्हारे घर वाले भी तुमसे पूछेंगे? क्या कर रही थीं तुम अपनी बहन के हनीमून पर? क्या ठीक करने आयी थीं तुम यहाँ? जिससे तुम्हारी बहन पूजा की जान चली गयी और तुम्हारे जीजा जी जान से जा-जाते!" नेहा चुप थी मानो वो कोई सच्चाई छुपाना चाह रही हो।

दलबीर ने प्रदीप को देखा मानो थोड़ी सख़्ती की अनुमति माँग रहा हो और प्रदीप ने अपना सर हिलाकर उसे अनुमति दे दी। इसके बाद दलबीर अपनी कुर्सी नेहा के और क़रीब ले आया और सीधा उस पर इल्ज़ाम लगा डाला-

"कोई झगड़ा था पूजा के साथ तुम्हारा? जिसका बदला लेने के लिए तुम उसके पीछे आ गयीं?"

नेहा- "बदला? मैं? अपनी बहन से?"

दलबीर- "हाँ बदला.. वही तो मैं जानना चाहता हूँ! किस बात का बदला लेना चाहती थीं तुम अपनी बहन से? ऐसी क्या ग़लती हो गयी थी उससे कि तुमने इतनी बेरहमी से

उसका मर्डर कर दिया, फिर अपने जीजा को मारने की कोशिश की!" कहते हुए उसने ज़ोर से टेबल पर अपना हाथ दे मारा। नेहा पहले तो दलबीर के मज़बूत हाथों की थाप सुनकर डर गयी। पर फिर ख़ुद को सँभालते हुए बोली-

"गलत कर रहे हैं आप इंस्पेक्टर साहब। आपके पास पावर है इसका मतलब ये नहीं कि आप मुझे पर दबाव डालकर मुझसे कुछ भी क़बूल करवा लेंगे। मैंने पूजा का ख़ून नहीं किया, ना ही अपने जीजा को मारने की कोई ऐसी कोशिश की। मैं तो रात को १ बजे ही होटल से चली गयी थी। ये देखो मेरा बोर्डिंग पास १.४० पे मैंने लिया था।" कहते हुए उसने अपना बोर्डिंग पास निकालकर दलबीर को थमा दिया। दलबीर ने भी नेहा की बात की पुष्टि की और बोर्डिंग पास प्रदीप को थमा दिया जो उसे ध्यान से देखने लगा। नेहा ने आगे कहा-

"आप पुलिस वालों का यही काम है, असली मुजरिम को कभी पकड़ते नहीं, जो हाथ आया उसे मुजरिम साबित करने के लिए पूरी ताक़त लगा देते हो।" दलबीर की नज़रें प्रदीप से मिलीं, मानो उससे पूछ रहा हो कि अब आगे क्या करना है। ये देख प्रदीप ने मुस्कुराते हुए नेहा को देखा और उसके सामने कुर्सी पर आकर बैठ गया। वो अपने परिचित अंदाज़ से अपनी गर्दन इधर-उधर घूमा रहा था। दलबीर जनता था कि जब भी प्रदीप ऐसे गर्दन घूमता है तो अपने पिटारे से कुछ न कुछ ज़रूर निकलता है। प्रदीप ने नेहा के सामने एक मुस्कराहट बिखेरते हुए कहा-

"देखो नेहा सही कहा तुमने ये पुलिस वाले कई बार अपनी पावर का ग़लत इस्तेमाल करते हैं और असली मुजरिम को पकड़ने की बजाए अपनी सारी पावर किसी कमज़ोर बेगुनाह को मुजरिम साबित करने में लगा देते हैं।" वो ये बात अब नेहा की आँख में आँख डालकर कह रहा था और नेहा ख़ुद को प्रदीप के अगले सवाल के लिए तैयार कर रही थी। प्रदीप ने एक लम्बा साँस लेते हुए कहा-

"और तुम अब इंस्पेक्टर दलबीर के हत्ते चढ़ गयी हो और मुझे पूरा यक़ीन है कि ये अपनी सारी पावर तुम्हें मुजरिम साबित करने में लगा देंगे और कामयाब भी हो जायेंगे। मैं इनकी क़ाबिलियत को जनता हूँ।"

नेहा- "पर मैं आपसे कह रही हूँ कि मैंने पूजा का ख़ून नहीं किया!"

प्रदीप- "फिर किसने? आई मीन तुम्हें किसी पे शक?

नेहा- "शायद .. शायद प्रेम ने?"

प्रदीप- "शक? कि यक़ीन?"

नेहा- "मुझे क्या पता? आप ही ने अभी-अभी कहा है कि दोनों एक ही कमरे में ज़ख़्मी हालत में मिले। प्रेम के हाथ में चक्कू था।"

"वो कमरा तुम्हारा था.... तुम उसमें रुकी हुई थीं।" प्रदीप ने अपनी आवाज़ हल्की सी ऊपर करते हुए कहा।

"मैंने कहा मैं रात को कमरा छोड़ चुकी थी!" नेहा से अब बर्दाश्त नहीं हो रहा था वो फूट-फूट के रो पड़ी।

"मैं कुछ नहीं जानती... कुछ नहीं जानती!"

प्रदीप- "ठीक है तो जो जानती हो वो बताओ!" नेहा ने देखा कि प्रदीप रुकने का नाम नहीं ले रहा था। उसके पास हर सवाल के जवाब में एक नया सवाल था। प्रदीप ने नेहा को आश्वासन देते हुए कहा-

"देखो नेहा तुम्हारे पास ख़ुद को बचाने के लिए सिर्फ़ एक ही रास्ता है कि तुम मुझे पूरी कहानी सच-सच सुनाओ.. नहीं तो..." नेहा ने हैरानी जतलाते हुए कहा-

"नही तो क्या? मतलब क्या है आपका? ग़लती कर दी जो आपके कहने पर यहाँ चली आयी। हाँ मैं आयी थी अपनी बहन और जीजा के साथ घूमने। इसमें क्या बुराई है! और फिर किस बिनाह पर आप मुझ पर ये इल्ज़ाम लगा रहे हैं?"

प्रदीप- "क्यों कि तुम्हारी बहन की लाश तुम्हारे कमरे में मिली है!"

नेहा- "मैंने कहा मैं अपना कमरा छोड़कर जा चुकी थी, उसके बाद कौन मेरे कमरे में आया, मुझे क्या मालूम। आपको एक बार में बात समझ नहीं आती? बार-बार एक ही सवाल पूछे जा रहे हैं!" प्रदीप नेहा की आँखें पढ़ रहा था जिनमें कई राज़ छुपे थे जो नेहा बताना नहीं चाहती थी। नेहा ने अपनी नज़रें घूमाते हुए प्रदीप के हर सवाल को नकारते हुए कहा-

"आप मुझसे यूँ ही कुछ भी नहीं उगलवा सकते, समझे? मुझे अपने घरवालों से बात करनी !" दलबीर की अब सब्र की सीमा पार होने लगी थी। उसने टेबल पर ज़ोर से हाथ मारते हुए कहा-

"बोलती हो या दूसरा रास्ता अपनाऊँ?" नेहा भी बेबाक थी। उसने भी टेबल को धक्का देते हुए कहा-

“मारो! मरोगे मुझे? मारो। वीडियो बनाकर वायरल कर दूँगी कि कैसे पुलिस वाले पूछताछ करने के बहाने से बुलाकर मासूम लोगों को जुर्म क़बूल करने के लिए मजबूर करते हैं!" दलबीर की आँखों में क्रोध देखकर प्रदीप ने उसे शांत रहने की सलाह दी। इस पर नेहा ने आगे कहा-

"जो करना है कर लो, पर मैं ऐसा कोई भी बयान नहीं दूँगी जो आप चाहते हैं। मुझे कुछ नहीं पता ना ही मैं जानती हूँ।" ये देख दलबीर ने दरवाज़ा खोलकर दो लेडी हवलदार को बुलवाया और उन्हें नेहा को पुलिस स्टेशन ले जाने का आदेश दे दिया। दलबीर का आदेश पाकर हवलदार नेहा को घसीटने लगे और नेहा यही चिला रह थी-

"ग़लत कर रहे हैं आप। बिना किसी सबूत के आप मुझे रोक नहीं सकते...मैंने पूजा का ख़ून नहीं किया।" नेहा के जाते ही दलबीर ने प्रदीप की ओर देखा जो अपने दिमाग़ में कोई नयी गणित कर रहा था। उसने उत्सुकतावश प्रदीप से पूछ लिया-

"क्या लगता है आपको?" इस पर प्रदीप ने मुक्सुराकर कहा-

"लगा तो आपको है, आपने उस लड़की को पुलिस स्टेशन भेज दिया।"

दलबीर- "प्रदीप जी तेवर देखे थे उसके? ऊपर से उसके कमरे से एक दो लाशें बरामद हुई हैं।"

प्रदीप- "तो उससे वो मुजरिम तो साबित नहीं हो जाती?"

दलबीर- "पर अगर हुई तो? अगर मैं उसे जाने की इज़ाज़त दे दूँ और वो फ़रार हो गयी तो?" प्रदीप ने मुस्कुराते हुए कहा-

"देखा फिर आपको बहुत जल्दी है केस क्लोज़ करने की, अभी तो हमें ये भी नहीं पता कि प्रेम ने पूजा को मारा है कि बचाव में पूजा ने उसे! या फिर कोई तीसरा है जिसने इन दोनों पर हमला किया और अगर कोई तीसरा है तो वो नेहा है या कोई और? अब ये बात तो तभी सामने आयेगी जब एक बार पोस्टमॉर्टेम की रिपोर्ट आ जाये या फिर प्रेम को होश!" दलबीर ने प्रदीप की बात को समझते हुए अपना ग़ुस्सा शांत किया। प्रदीप ने दलबीर को पानी का गिलास पकड़ाते हुए कहा-

"फ़िलहाल इस कहानी में तीन पात्र हैं.. एक पूजा जिसकी मौत हो गयी है.. दूसरा उसका पति प्रेम जो हॉस्पिटल में ज़िन्दगी और मौत से लड़ रहा है और तीसरी नेहा, फ़िलहाल नेहा ही है जो इस कहानी की बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ सकती है।" कहते हुए उसने जेब से सिगरेट निकाली। दलबीर ने भी उसके पैकेट से एक सिगरेट निकालते हुए पूछा-

"आपको लगता है कि वो लड़की इतनी आसानी से मुँह खोलेगी? बस एक सबूत मिल जाये न.." वो अपनी बात पूरी ही नहीं कर पाया था कि एक हवलदार ने दलबीर को कुछ सामान लाकर दिया जो उसे पूजा और प्रेम के कमरे से मिला था। यानी कमरा नंबर ३२० से। उस सामान में पूजा और प्रेम के मोबाइल भी थे। प्रदीप ने प्रेम का मोबाइल उठाते हुए हवलदार से पूछ लिया-

"ये कमरा नंबर ३२० से मिला तुम्हें?"

हवलदार- "जी सर!" प्रदीप ने मोबाइल देखना शुरू किया, तो उसकी आँखें चमख उठीं। उसने एक लंबा कश लेते हुए कहा-

"लो आपको नेहा की ज़ुबान खुलवाने के लिए कोई सबूत चाहिए था ना? ये रहा!" कहते हुए उसने दलबीर के हाथ में प्रेम का मोबाइल थमा दिया। दलबीर ने जब प्रेम का मोबाइल देखा तो उसकी आँखों में भी एक चमक आने लगी। मानो उसके हाथ जैकपोट लग गया हो।

उधर पुलिस स्टेशन में नेहा परेशान बैठी थी। वो बार-बार हवलदार को अनुरोध कर रही थी कि उसका मोबाइल दे दें, उसने अपने घरवालों से बात करनी है, पर उसकी कोई

नहीं सुन रहा था। अचानक उसने देखा सामने ही दलबीर अपनी सिगरेट सुलगा रहा था। नेहा ने वहीं से चिल्लाते हुए कहा-

"तुम मुझे ज़बरदस्ती फँसा रहे हो। यही करते हो पुलिस स्टेशन में मासूम लोगों के साथ?" इतना सुनते ही दलबीर तेज़ी से उसकी और आया और प्रेम का मोबाइल दिखाते हुए नेहा से कहा-

"तो क्या है ये? बोल दो ये वीडियो भी झूठ है?" नेहा के होश उड़ गये। उस वीडियो में उसकी और प्रेम की एक अश्लील फ़िल्म चल रही थी। जहाँ वो और प्रेम निर्वस्त्र, प्रेम क्रीड़ा में लीन थे। दलबीर ने नेहा से मोबाइल छीनते हुए कहा-

"इस वीडियो में तुम और तुम्हारा जीजा प्रेम ही हैं न? यही ग़लत था जो तुम ठीक करके गयी थीं? है ना?... क्या बोली थीं कि बहन और जीजा के साथ घूमने नहीं आ सकती? तुम उनके साथ घूमने आयी थीं कि घुमाने? बोलो ये तुम ही हो ना, या तुम्हारे घरवालों को बुलवाकर इस वीडियो की पुष्टि करूँ?" नेहा जानती थी वो फँस चुकी है। वो वहीं बैठकर रोने लगी-

"हाँ ये मैं ही हूँ...पर मैंने पूजा को नहीं मारा... नहीं मारा.." दलबीर ने थोड़ी नर्मी दिखाते हुए कहा-

"देखो अगर तुम चाहती हो कि हम तुम्हारी मदद करें तो हमें सारी कहानी बताओ सच सच। इस वीडियो की सच्चाई की कहानी!"

नेहा की आँख मैं आँसू थे। वो समझ गयी थी कि पुलिस को सच्चाई बताने के सिवा उसके पास कोई रास्ता नहीं था। और अगले ही पल पुलिस स्टेशन के एक कमरे में नेहा प्रदीप और दलबीर के सामने बैठी थी। दलबीर ने अपने मोबाइल में रिकॉर्डर ऑन कर दिया। प्रदीप ने नेहा को रिलैक्स्ड करते हुए कहा-

"बोलो जो भी बोलना है, पर याद रखना तुम्हारे बयान की सच्चाई ही तुम्हें बेगुनाह साबित कर सकती है!" नेहा अतीत में जाने लगी। मानो वो सारे घटनाक्रम को याद करने की कोशिश कर रही थी। उसके दिमाग़ में जैसे अब सारी बातें किसी फ़िल्मी फ़्लैशबैक की तरह घूमने लगी थीं।

इस कहानी की शुरूआत कुछ दिन पहले छतरपुर से हुई थी। दिल्ली से सटे छतरपुर के एक फ़ार्म हाउस में शादी का माहौल था। हर तरफ़ रौनक़ ही रौनक़ थी। सामने एक बड़ा-सा बोर्ड चमक रहा था। प्रेम वेड्स पूजा। दो दिन बाद प्रेम शर्मा और पूजा पाण्डेय की शादी जो थी। यह एक अरेंज्ड मैरिज थी। प्रेम के पिता सुरेश शर्मा और पूजा के पिता सिद्धेश्वर पाण्डेय बचपन के दोस्त थे। इसी के रहते उन्होंने अपनी दोस्ती को रिश्तेदारी में बदल लिया था। पूजा को तो प्रेम पहली नज़र में ही भा गया था। पूजा की मम्मी ने जब पूजा को प्रेम की तस्वीर दिखायी थी तो उसने तभी ही शर्माकर हामी भर दी थी और एक महीने में ही शादी

की तारीख़ भी निकल आयी। पाण्डेय जी और शर्मा जी ने मिलकर छतरपुर में एक रिसोर्ट बुक कर डाला। नज़दीकी रिश्तेदारों और दोस्तों को ही निमंत्रण भेजा था।

उसी रिसोर्ट में सभी रस्में एक साथ करने का फ़ैसला दोनों परिवारों का ही था। हाँ डेस्टिनेशन मैरिज। हर तरफ़ ख़ुशी का माहौल था। रिसोर्ट के एक तरफ़ लड़की वाले और दूसरी तरफ़ लड़के वाले। इधर लड़की वालों के यहाँ पूजा को हल्दी लग रही थी। उसकी चाचियाँ, उसकी मामियाँ सभी उसके गोरे बदन पर हल्दी लगाकर उसे निखार रही थीं और सबसे आगे थी बिंदु चाची। बिंदु चाची पूजा से तक़रीबन ६-७ साल ही बड़ी रही होंगी इसीलिए वो कुछ ज़्यादा ही खुली हुई थीं पूजा से। बिंदु चाची ने देखा कि सभी औरतें पूजा के पाँव पर या बाज़ुओं पर हल्दी लगा रही थीं, मानो सिर्फ़ औपचारिकता कर रही हों। बिंदु चाची की नज़र नेहा से मिली और दोनों ने आँखों ही आँखों में ये तो तय कर लिया था कि सब बहुत बोरिंग चल रहा है। मज़ा नहीं आ रहा। बस फिर क्या था बिंदु चाची को शरारत सूझी, उसने मट्ठी में ढेर सारा हल्दी का लेप उठाया और पूजा का ब्लाउज़ खोलकर उसके अंदर अपना हाथ घुसा दिया। पूजा को तो बिंदु चाची की इस हरकत की उम्मीद ही नहीं थी। उसने कस कर अपना ब्लाउज़ पकड़कर अपने गले के साथ दबा लिया और चिल्लाने लगी-

"अरे!.. ये क्या कर रही हो चाची...?" बिंदु चाची की नज़रें नेहा से मिलीं, दोनों के बीच इस शरारत को लेकर सहमती हुई और फिर बिंदु ने पूजा पर अपनी पकड़ मज़बूत करते हुए कहा-

"अब भाला चाची से कैसी शर्म? वही तो तेरे पास है जो मेरे पास.." कहते हुए उसने हाथ में और हल्दी भरी और पूजा के ब्लाउज़ में हाथ डालकर उसके वक्षों पर मसलने लगी। पूजा को गुदगदी सी हो रही थी।

पूजा- "क्या कर रही हो चाची, गुदगुदी हो रही है।" कि एक मामी ने फब्ती कसते हुए कहा-

"प्रेम तो और भी कई जगह छूएगा.. तब भी यही कहगी कि गुदगुदी हो रही है?" कहते हुए वो क्या हँसी वहाँ बैठी सभी औरतें हँस दीं। पूजा को तो जैसे समझ ही नहीं आया कि इसमें हँसने की क्या बात थी! इतनी सीधी थी पूजा और यह बात उसकी छोटी बहन नेहा जानती थी। पूजा के विपरीत एक दम चंट थी नेहा। नेहा पूजा से बेशक एक साल छोटी थी पर बातों में पूजा से कहीं बड़ी। वो भी चाची और मामी के इस मज़ाक़ में शामिल हो गयी।

"चाची ज़रा बताओ तो सही जीजा जी दीदी को कहाँ कहाँ छुएँगे?" बिंदु चाची को समझने में देर नहीं लगी कि नेहा अब मज़ाक़ के मूड में है। उसने मामी को आँख मारी जिसने इस मज़ाक़ में अपने शामिल होने की सहमती दे दी थी।

बिंदु चाची- "नेहा ज़रा दरवाज़ा तो बंद कर।" इतना सुनते ही नेहा ने फट से कमरे का दरवाज़ा बंद कर दिया और फिर बड़ी चाची और मामी ने तो पूजा के हाथ-पाँव पकड़ लिये।

"अरे!अरे! ये क्या कर रही हैं आप लोग?" पूजा ने घबराते हुए पूछा। पर इन औरतों के आगे उसकी एक नहीं चल रही थी और फिर जो हुआ पूजा को तो उसकी कल्पना भी नहीं थी। सबने मिलकर पूजा के हाथ-पाँव पकड़ लिये। किसी ने उसका ब्लाउज़ खोल दिया तो किसी ने उसका घाघरा ऊपर उठा दिया और फिर एक लोक गीत गाते हुए उसके बदन पर हल्दी का उबटन लगाने लगे। लोक गीतों के बोलों में किसी सुन्दरी की ख़ूबसूरती की प्रशंसा थी। उसके हर अंग के बारे में ज़िक्र और जिस अंग का नाम उस गीत में आता। सभी औरतें उसी अंग पर हल्दी मलने लगतीं। पूजा इस बेहूदगी से छटपटा उठी-

"व्हाट इस दिस नॉनसेंस... मम्मी! मम्मी!"

चाची- "इसमें तेरी मम्मी क्या कर लेगी पूजा? ये तो हमारे ख़ानदान की परम्परा है। हर नवेली दुल्हन के बदन को उसके पति के लिए यूँ ही हल्दी और उबटन का लेप लगा के सजाया जाता है ताकि वो अपनी नयी नवेली दुल्हन के बदन को ऐसे छुकर आनंद ले सके। ये जो हम कर रहे हैं न?.. ये सब प्रेम करेगा.. बस उसे इमेजिन कर.." कहते हुए वो हँस दीं। पूजा देखकर हैरान थी कि इतनी सीधी सांस्कारिक दिखने वाली उसकी मामियाँ और चाचियाँ, इस तरह की गंदी और बेहूदा बातें भी कर सकती हैं। पर चाहकर भी वो उन सब का विरोध नहीं कर पा रही थी। धीरे-धीरे पूजा ने आँख बंद करके अपने बदन को उन सबके हवाले कर दिया था। अब पूजा के बदन पर हल्दी की एक चादर-सी बन गयी थी। अब उसे भी सभी औरतों का स्पर्श अच्छा लगने लगा था। नेहा भी अब ये सारा नज़ारा देखकर हैरान थी। पूजा की ये हालत देख उसके मन में भी तितलियाँ उड़ने लगीं। उसका भी मन कर रहा था कि ये सब उसके साथ भी हो कि अचानक उसने देखा चाची अब पूजा की दोनों टाँगों के बीच हल्दी का लेप लगा रही है, पर अचानक चाची का हाथ पूजा की दोनों टाँगों के बीच में जाकर रुक गया-

"ये क्या पूजा तूने यहाँ नीचे से क्लीनिंग नहीं करवाई?" और सभी औरतें पूजा का घाघरा उठाकर उसकी टाँगों के बीच झाँक कर देखने लगीं। अब पूजा का सब्र का बाँध टूट रहा था। वो ज़ोर-ज़ोर से अपनी टाँगे हिलाकर छटपटाने लगी।

"बेशरम हो गये हो आप सभी लोग। ऐसा कौन करता है?" वो रोने की कगार पर थी, पर वो कुछ कर नहीं पा रही थी क्योंकि औरतों ने उसके हाथ पाँव जकड़े हुए थे और लोक गीत गाने में मस्त थीं।

पूजा- "चाची स्टॉप इट ...नेहा मम्मी को बुला... मम्मी को बुला!" वो ज़ोर से चिल्ला रही थी। पर नेहा भी अब मज़े लेने के मूड में थी। चाची के कहने पर तो वो हेयर रिमूवर ले आयी। पूजा के होश उड़ गये, उसने देखा दो महिलाओं ने उसके हाथ जकड़ लिये और छोटी मामी की मदद से चाची ने पूजा की टाँगे फैला दीं। ये देख पूजा डर गयी। उसका मुँह खुल गया।

"ये क्या करने लगे हो आप लोग? ये क्या बदतमीज़ी है? हाथ छोड़ो मेरे नहीं तो चिलाऊँगी!!" नेहा ने हेयर रिमूवर की डिब्बी खोलते हुए चाची के हाथ में थमा दी और चाची अब लोक गीत गाते हुए हेयर रिमूवर से पूजा की टाँगों के बीच लगाने लगी थी। पूजा का रोना निकल आया, "इसकी क्या ज़रूरत है?"

चाची- "ज़रूरत तेरी नहीं अली बाबा की है जो सिम सिम का दरवाज़ा खोलने आयेगा और उसे कोई रुकावट नहीं मिलनी चाहिए।" इतना सुन सभी औरतों की हँसी छूट गयी और बेचारी पूजा इन औरतों के पागलपन पर रोये जा रही थी। नेहा ने आज जाना कि अलीबाबा किसे और सिम सिम वाली गुफा किसे कहते हैं। उसके बाद चाची ने एक कपड़े का टुकड़ा उठाया और पूजा की टाँगों के बीच में रख दिया। पूजा जानती थी कि इसके बाद क्या होने वाला था। वो पहले ही चिल्लाने लगी, पर चाची ने बिना परवाह किये उस कपड़े को ज़ोर से खींच डाला और पूजा की चीख़ उस लोक गीत के शोर में दब के रह गयी। वो रोये जा रही थी।

"बहुत ग़लत कर रहे हो तुम लोग!!" बेशक पूजा के आँसू निकल आये थे। पर नेहा का मन तो प्रेम और पूजा की सुहागरात तक पहुँच चुका था कि बड़ी चाची की आवाज़ ने उसे चौंका दिया।

बड़ी चाची- "जल्दी करो लड़के को भी हल्दी लगाने जाना है.." उधर लड़के वालों के यहाँ यही कार्यक्रम चल रहा था। प्रेम को उसकी भाभियाँ हल्दी लगा रही थीं और प्रिया अपनी टीम के साथ इस पूरे कार्यक्रम की फ़ोटोग्राफ़ी कर रही थी कि तभी प्रेम की माता जी श्रीमती पाण्डेय ने आकर बताया-

"लड़की वाले प्रेम को मेहँदी लगाने आ रहे हैं.."उसने प्रिया को भी कहा-

"प्रिया सबकी अच्छी-सी तस्वीरें खींचना। एल्बम में कमी नहीं रहनी चाहिए।"

प्रिया- "जी आंटी जी..." कहते हुए उसने अपना कैमरा नीचे किया और उसका कार्ड बदलने के लिए अंदर अपने कमरे की ओर चली गयी। प्रेम भी खड़ा हो गया। ये देख उसकी मम्मी ने उसका हाथ पकड़ते हुए पूछ लिया-

"अरे तू कहाँ जा रहा है प्रेम? ऐसे बीच में नहीं उठते अपशगुन होता है।"

प्रेम-"मम्मी बाथरूम आ रहा है, यहीं निकल गया तो वैसे ही शगुन अपशगुन हो जायेगा!" यह सुन सभी हँस पड़े। प्रेम की ताई जी ने कह दिया-

"जाने दे लीला, कोई अपशगुन न होता। हल्दी तो लग चुकी है।" ताई की बात पर प्रेम को अंदर जाने की इजाज़त मिल गयी थी।

कुछ देर बाद उस हॉल में लड़की वाले प्रेम को हल्दी लगाने पहुँच गये। नेहा, उसकी चाचियाँ, मामियाँ, सभी औरतें वहाँ आ गयी थीं। नेहा की नज़रें प्रेम को तलाश रही थीं। उसने प्रेम की मम्मी से पूछ लिया-

"आंटी जी जीजू कहाँ हैं? दिख नहीं रहे.. या हमारे डर से छुप गये हैं?" इतना सुन सभी हँस पड़े। प्रेम की मम्मी प्रेम को पुकारने ही वाली थी कि तभी प्रेम आ गया। प्रेम की मम्मी ने प्रेम को प्यार से बिठाते हुए नेहा से कहा-

"लो! आ गया तेरा जीजू, कर ले अपने अरमान पूरे.." और फिर बिंदु चाची ने हल्दी रस्म शुरू कर दी। सभी औरतें लोक गीत गाने लगीं और प्रेम के बदन पर हल्दी लगा रही थीं। इस बार गीत के बोलों में लड़के को उसकी होने वाली पत्नी के लिए सँवारने की बात हो रही थी। नेहा देख रही थी कि प्रेम का बदन वर्ज़िशी है। माँसपेशियाँ काफ़ी सख़्त हैं। उसके मन में कई ख़याल आने लगे कि इन्हीं सख़्त मसल्स को उसकी बहन कल रात छूएगी। नेहा ने देखा कि प्रेम ने पायजामा पहना हुआ है और वो चुपचाप सभी औरतों से हल्दी लगवा रहा था। नेहा अब कल्पना करने लगी कि प्रेम के पायजामे के अंदर अली बाबा आराम कर रहा होगा! जो कल रात उसकी बहन की सिम सिम में प्रवेश करेगा। कैसा होगा? ये जानने के लिए उसके मन की उत्सुकता बढ़ने लगी थी। उसे एक शरारत सूझी। उसने चाची के कान में कहा-

"चाची जीजा जी को भी वैसे ही हल्दी लगाओ न जैसे पूजा दीदी को लगायी थी!" चाची नेहा की बात समझकर ख़ुद ही शर्मा गयी।

"पागल हो गयी है क्या.. चुप ऐसी बात नहीं करते।"

नेहा- "क्यों? दीदी के साथ वो सब कर सकते हो, जीजा के साथ क्यों नहीं?" वो इतनी ज़ोर से बोली कि सभी देखने लगे के आख़िर नेहा ने क्या बोला! बल्कि सब अब ये जानना चाहते थे कि नेहा क्या चाहती है। प्रेम की मम्मी ने नेहा से प्यार से पूछ ही लिया-

"बोल नेहा बेटा क्या बात है? मुझे बता.. शर्मा नहीं अब ये घर भी तेरा भी है .. बोल!" बिंदु चाची घबरा रही थी कि कहीं मुँहफट नेहा कुछ उल्टा-सुलटा न बोल दे। पर वही हुआ, नेहा ने बेबाक होकर सबके सामने प्रेम की मम्मी से कह दिया-

"आंटी जी जब मेरी दीदी को हल्दी लगी, तो उसके सारे कपड़े उतार कर उसके पूरे बदन पर हल्दी लगायी गयी, ये कहकर जीजा जी उसके पूरे बदन को छुएँगे तो उनको अच्छा लगेगा.. और जब जीजा जी की बारी आयी तो इन्होंने तो कमर से लेकर पाँव तक सब ढँक रखा है। क्यों पूजा दीदी जीजा जी को कमर के नीचे नहीं छूएगी क्या?" नेहा की ये बातें सुनकर सभी औरतें अपनी बग़लें झाँकने लगीं कि कैसी अजीब लड़की है ये और बिंदु चाची ने तो उसे चिमटी काटते हुए चुप रहने की सलाह दे डाली।

"चुप कर जा नेहा.. क्या बकवास किये जा रही है। कोई अक्ल वक्ल नाम की चीज़ है कि नहीं तुझमे?" पर नेहा तो समझ रही थी कि उसकी बात में तर्क है। उसने अगला सवाल प्रेम की मम्मी पर दाग दिया। जिससे प्रेम की मम्मी अब पानी पानी हो गयी-

"आंटी जी आप ही मुझे बताइए एक लड़के के लिए लड़की के हर अंग को सँवारा जाता है। सर से पाँव तक हल्दी उबटन लगाया जाता है.. तो लड़के को ऐसे आधा ढँक कर

क्यों रखा जाता है? ये कहाँ की परम्परा हुई भला?" इतना सुनकर सबने अपने कान बंद कर लिये। बिंदु चाची ने तो नेहा को डाँटते हुए कह दिया-

"तू जा यहाँ से, तेरी कोई ज़रूरत नहीं है!" पर नेहा जाने को तैयार नहीं थी। नेहा का बेबाकपन देखकर प्रेम की मम्मी वहाँ से कहते हुए निकल गयी-

"बेटा अब प्रेम तुम्हारा है जो मर्ज़ी करो इसके साथ.." प्रेम भी कहाँ कम था.. वो तो नेहा की बड़ी-बड़ी आँखों में उसकी मासूमियत देखकर दंग था। नेहा की आँख में आँख डालते हुए उसने फट से अपने पायजामे का नाड़ा खोलना शुरू कर दिया। यह देख वहाँ सभी औरतों ने आँखें बंद कर लीं।

चाची- "नहीं नहीं दामाद जी.. ये नेहा तो पागल है... मत करो ये सब!" बेशक सब औरतों ने अपनी आँखें बंद कर लीं थी पर नेहा ने नहीं। उसकी उत्सुकता बढ़ रही थी। वो देखना चाहती थी कि पूजा की सिम सिम के लिए उसका अलीबाबा कैसा होगा।

प्रेम ने तब अपना पायजामा खोलकर सबको चौंका दिया। उसने नीचे वो एक भूरे रंग का वी शेप जाँघिया पहने हुआ था। सभी औरतों की जान में जान आयी कि प्रेम ने कम से कम नीचे कुछ तो पहना हुआ था, पर ये देख नेहा निराश हो गयी। उसकी तो अली बाबा के दर्शन की अभिलाषा ही रह गयी थी। वक़्त बर्बाद न करते हुए बिंदु चाची ने लोक गीत गाते हुए हल्दी का कार्यक्रम शुरू कर दिया और प्रिया इस पूरे कार्यक्रम को अपने कैमरे में क़ैद करने लगी। नेहा ने हल्दी का लेप लेकर प्रेम की टाँगों पे मलना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे उसकी मज़बूत जाँघों पर। उसके हाथ प्रेम के जाँघिये को छूने को मचल रहे थे। मानो वो जानना चाह रही थी कि ऐसा क्या छुपा रखा है प्रेम ने जो उसकी बहन पूजा को मिलने वाला है और प्रेम अब समझ चुका था कि बेशक नेहा बड़बोली है पर है मासूम। चाची ने यह देख लिया और उसने नेहा का हाथ पीछे करके कार्यक्रम को जल्दी से ख़त्म कर दिया और सभी औरतें प्रेम को आशीर्वाद देकर निकल गयीं। लड़की वालों के जाते ही प्रेम की मम्मी अंदर आयीं-

"कितनी बेशर्म है यह लड़की नेहा!" कि प्रेम की चाची ने कहा-

"भाभी आज कल की लड़कियाँ ऐसी ही होती हैं, वैसे उसकी बात में लॉजिक तो था। आप ही जवाब नहीं दे पायीं!" कहते हुए सभी हँस दिए। पर प्रेम के दिमाग़ में नेहा छा चुकी थी। अब वो उस मौक़े की तलाश में था जब नेहा से वो अकेले में मिल सके।

पूरे बारातघर में एक हलचल थी। सभी ऐसे घुले मिले थे जैसे कि एक ही परिवार के हों। अक्सर ऐसी शादियों में ऐसा ही माहौल होता है, ख़ास कर जब दोनों तरफ़ का हलवाई एक ही हो। उस दिन हलवाई गरमा-गरम पकोड़े तल रहा था और नेहा लड़की की बहन होने का अपना हक़ दिखाते हुए लाइन तोड़कर सबसे आगे आ गयी और अपनी प्लेट हलवाई के आगे करते हुए बोली-

"भईया जी पहले मुझे दे दो.." प्रेम की मामी भी वहीं खड़ी थी, उसने हँसते हुए कहा-

"नेहा ऐसे कैसे तू लाइन तोड़कर आगे आ रही है!"

नेहा- "आंटी लड़की की बहन हूँ, पूजा के लिए ले जा रही हूँ!"

मामी- "मैं भी लड़के की मामी हूँ, ये पकोड़े तेरे होने वाले जीजा प्रेम के लिए ले जा रही हूँ!" कि तभी प्रेम वहाँ पहुँच गया, शायद पहले से ही वहीं-कहीं था। बस नेहा के क़रीब आने का इंतजार कर रहा था। उसने मामी से प्लेट लेते हुए कहा-

"जाने दो मामी जी, हमारी होने वाली साली है और साली का हक़ तो घरवाली से ज़्यादा होता है।" कहते हुए उसने नेहा को मुस्कुराकर देखा। नेहा प्रेम की तीखी नज़रों को ज़्यादा देर बर्दाश्त नहीं कर पायी। उसने नज़रें झुकाते हुए कहा-

"नहीं जीजा जी, पहले आप ले लीजिए.." इतना सुन मामी वहाँ से कहते हुए निकल गयी-

"वाह प्रेम अब तो तू ससुराल वालों का हो गया है, अब तो तेरी साली ही तेरी सेवा करेगी!" प्रेम ने हलवाई से प्लेट में गरम पकोड़े डलवाकर नेहा को अलग ले जाकर प्लेट उसके आगे कर दी

"लो.. ले जाओ।" नेहा ने शिष्टाचार का परिचय देते हुए कहा-

"नहीं जीजा जी, आप पहले ले लीजिये।"

प्रेम- "ना, अब तो न खाते हम ये पकोड़े!"

नेहा- "क्यों?"

प्रेम- "-अब तो जलन हो रही है हमें तुम्हारी दीदी से?"

नेहा ने हैरानी से पूछा, "क्यों?"

प्रेम ने हँसते हुए कहा, "भाई पूजा को पकोड़े खिलाने के लिए इतनी सुंदर नेहा है और हमें देखो बूढ़ी मामी खिला रही थी!" नेहा ने प्रेम की अठखेली को समझते हुए कहा-

"ओके जीजा जी, लीजिये हम आपको ऑफ़र कर देते हैं!" कहते हुए उसने प्लेट लेकर प्रेम के आगे कर दी। प्रेम को पकोड़ों से ज़्यादा नेहा के सौन्दर्य में दिलचस्पी थी। एक ही पल में उसने नेहा को ऊपर से नीचे तक नाप लिया था। उसने प्लेट को पीछे करते हुए कहा-

"ना! अब तो हम पकोड़े तब खाएँगे जब तुम हमें देने आयोगी। सामने ऊपर कोने वाला कमरा मेरा है!" कहकर मुस्कुरा कर चला गया। नेहा को समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए! पर इतना तो वो जानती थी कि प्रेम उसका होने वाला जीजा है तो उसे सेवा करवाने का हक़ भी है। ये सोच वो मुस्कुरायी और प्रेम के कमरे की ओर चल पड़ी।

प्रेम का कमरा पहली मंज़िल पर कोने में था। जहाँ कम ही लोग आते-जाते थे। नेहा पकोड़ों की प्लेट लेकर प्रेम के कमरे के पास पहुँच गयी। उसने जैसे ही दरवाज़े पर हल्की-सी दस्तक दी, अंदर से प्रेम की आवाज़ आयी-

"अंदर आ जाओ.." नेहा दरवाज़ा खोलकर अंदर आ गयी। नेहा ने देखा कि वहाँ बिस्तर पर प्रेम के कपड़े बिखरे हुए हैं और वहाँ शीशे के सामने प्रेम शेव करने के लिए चेहरे पर साबुन लगा रहा था। प्रेम के बदन पर कोई कपड़ा नहीं था। सिर्फ़ नीचे पायजामा पहन रखा था। नेहा ने देखा प्रेम का बदन बहुत सुडोल है। उसने नज़रें झुकाकर कहा-

"लीजिये आपके लिए पकोड़े लायी हूँ.." प्रेम ने मुड़कर नेहा को देखा। वाक़ई अनछुई कच्ची कली थी नेहा। ज़ुबान की बेशक तेज़ रही हो पर एक दम मासूम। प्रेम प्लेट पकड़ने के बहाने नेहा का हाथ पकड़ लिया। नेहा सिहर उठी। ये देख प्रेम ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया-

"अरे तुम तो डर गयीं, नाबालिग़ हो?" नेहा को प्रेम से ऐसे किसी भी सवाल की उम्मीद नहीं थी।

नेहा- "नहीं! २३ की हूँ।" प्रेम ने छेड़ते हुए कहा- "बिहेवियर तो १५ साल की लड़की की तरह कर रही हो, अच्छा चलो अपने हाथ से पकोड़े खिलाओ अपने जीजा जी को.."

नेहा- "आप ख़ुद खा लीजिये!" हिचकिचाते हुए कहा। प्रेम में नेहा के हाथ अपने मुँह के पास ले जाते हुए कहा-

"क्यों डर लग रहा है कि मैं तुम्हारा हाथ खा जाऊँगा, सुबह तो खुलकर मेरे बदन पर हल्दी लगा रही थीं, तब घबराहट नहीं हो रही थी?" कहते हुए वो नेहा का हाथ अपने होंटो के पास ले आया। नेहा समझ गयी थी कि प्रेम ने उसे ऐसी बात पर घेर लिया था जिसका जवाब उसके पास नहीं था। नेहा ने सर झुकाकर अपने हाथ प्रेम के होंटों के नज़दीक कर दिया जिससे वो पकोड़ा खा सके और प्रेम ने मौक़े का फ़ायदा उठाकर नेहा की दो उँगलियाँ ही अपने मुँह में डाल लीं और अपने होटों से लगभग चाट डालीं। नेहा सिहर उठी। वो तो बस प्लेट वहाँ रखकर जाना चाहती थी कि प्रेम ने उसकी कलाई पकड़ते हुए कहा-

"क्या हुआ? ऐसा क्या कर दिया जो भाग रही हो?"

नेहा- "मुझे जाना है, देर हो रही है!" प्रेम ने अपने मज़बूत हाथों से नेहा को अपने क़रीब खींचते हुए कहा-

"क्यों मेरा साथ अच्छा नहीं लग रहा?" कहते हुए वो अपने गाल नेहा के इतने क़रीब ले आया कि उसके चेहरे पर लगा साबुन नेहा के गाल पर लग गया। नेहा सँभल पाती कि प्रेम ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा और नेहा के कँधे पकड़कर उसे शीशे के सामने कर दिया। नेहा ने देखा कि उसके चेहरे पर साबुन से दाढ़ी-मूँछ बन गयी है। नेहा ने प्यार भरी शिकायत करते हुए अपना चेहरा पोंछना शुरू कर दिया-

"ये क्या किया जीजा जी!" प्रेम ने नेहा के दोनों हाथ पकड़ लिया-

"नहीं रुको, एक ही बार पोंछना! तुम्हें एक खेल दिखता हूँ। बस सीधी खड़ी रहो।" कहते हुए उसने अपने गाल से नेहा के गाल पर साबुन लगाना शुरू कर दिया। पहले तो नेहा ने हल्का विरोध किया-

"जीजा जी प्लीज़ मुझे जाने दीजिये.." प्रेम ने नेहा के दोनों हाथ जकड़ते हुए कहा, "कुछ कहा मैंने? कुछ ग़लत किया? नहीं ना। बस एक खेल खेल रहा हूँ, साबुन खेल। बचपन में हम सब खेला करते थे!" कहते हुए उसने अब अपना चेहरा नेहा की गर्दन पर घूमना शुरू कर दिया। नेहा को अब प्रेम की ये छुवन अच्छी लग रही थी। उसका विरोध ढीला होता जा रहा था और प्रेम की पकड़ मज़बूत। प्रेम ने देखा कि नेहा की आँख बंद ,है उसके वक्ष उसके सामने थे। उसने साहस करके धीरे से अपने हाथ नेहा के एक वक्ष पर रख दिया। प्रेम का हाथ अपने वक्ष पर अचानक से पाकर नेहा चौंक उठी। उसने लगभग प्रेम को धक्का दे दिया-

"जीजा जी ये क्या कर रहे हैं आप, हटिये मुझे जाने दीजिये!" कहते हुए वो जाने को थी के प्रेम जोर से हँस पड़ा।

"सॉरी! सॉरी! यार मुझे नहीं पता था तुम एक डरपोक, पिछड़ी हुई नाबालिग़ बच्ची हो। सॉरी!" नेहा को ऐसा महसूस हुआ जैसे प्रेम ने ये तीन शब्द कहकर उसे गाली दे दी है। उसके अहम को ठेस पहुँच गयी थी। उसने वहाँ पड़े टॉवेल से अपना मुँह पोंछते हुए कहा-

"ना मैं डरपोक हूँ, ना पिछड़ी हुई और ना ही नाबालिग़!" इसके तुरंत बाद जो प्रेम ने जो किया नेहा को उसकी उम्मीद ही नहीं थी। प्रेम ने अपनी दोनों हथेलियाँ नेहा के वक्षों पर रख दीं।

प्रेम-"अभी साबित हो जायेगा!" कहते हुए उसने वैसे ही नेहा को दीवार की तरफ़ धकेल दिया। नेहा के बाल बिखर गये उसके साँसें बढ़ने लगीं थीं पर इस बार नेहा ने प्रेम का विरोध नहीं किया, वो ग़ुस्से में प्रेम को देखे जा रही थी। नेहा की साँसें ज़ोर-ज़ोर से चल रही थीं। जिससे उसके वक्ष ज़ोर-ज़ोर से हिल रहे थे और प्रेम के हाथ उसके वक्षों से ताल-मेल बिठा रहे थे।

"वर्जिन हो?" प्रेम का अगला प्रश्न भी नेहा के अहम को एक और चोट पहुँचाने के लिए काफ़ी था। नेहा के जवाब से पहले ही प्रेम ने कह दिया-

"जानता हूँ, कभी किसी लड़के ने नहीं छुआ तुम्हें। इतने तने हुए आकर्षित वक्ष सिर्फ़ एक वर्जिन लड़की के ही हो सकते हैं। कभी इन्हें शीशे में देखा है? देखना ख़ुद महसूस करोगी कितने ख़ूबसूरत हैं, जिन्हें किसी की तारीफ़ की ज़रूरत है.." नेहा तो प्रेम की किसी भी बात का जवाब नहीं दे रही थी। वो बस प्रेम को देखे जा रही थी। प्रेम भी अब समझ चुका था कि चिड़िया जाल में फँस चुकी है। उसने नेहा के चेहरे पर अपनी साँस बिखरते हुए कहा-

"किस कर लूँ?" नेहा बस लम्बे-लम्बे साँस लेकर प्रेम को घूरे जा रही थी। उसकी लटें माथे पर बिखर कर प्रेम को आमंत्रण दे रही थीं कि प्रेम ने हिम्मत दिखायी और वो अपने होंट जैसे ही नेहा के गाल के नज़दीक लेकर गया, नेहा ने प्रेम को एक धक्का दिया और प्रेम के चेहरे पर तीन चार चपत जड़ डाले। प्रेम एकदम अवाक रह गया। उसे नेहा से इस रव्विये की उम्मीद नहीं थी। एक पल के लिए वो डर भी गया। उसने देखा कि नेहा अभी भी ग़ुस्से से साँसें फूला रही है। अब प्रेम को लगा कि उसे नेहा से माफ़ी माँग लेनी चाहिए, पर उससे पहले ही नेहा वहाँ से भाग गयी। प्रेम की नज़रों में एक डर था कि कहीं नेहा ये बात किसी को जाकर बता ना दे।

उधर नेहा जैसे ही लड़की वालों की तरफ़ पहुँची, तो पाया वहाँ काफ़ी हलचल थी। हॉल में हर औरत अपनी सुविधा अनुसार जगह ढूँढ़ कर तैयार हो रही थी। ज़्यादातर सभी औरतें, चाची, ताई, मामियाँ, बुआ सभी तो पेटीकोट और ब्लाउज़ में ही थीं। किसी को किसी से शर्म नहीं थी कि अचानक बिंदु चाची ने उसके कँधे पर हाथ मर कर उसे चौंका दिया-

"कहाँ रह गयी थी तू? पकोड़े लेने गयी थी ना!" इतना सुनते ही नेहा के सामने प्रेम के संग उसकी मुलाक़ात में मंज़र उभर गये।

"वो मैं.. ज़रा अरेंजमेंट देख रही थी.." कहते हुए उसने देखा कि बिंदु चाची ने हाथ में एक छोटा-सा शीशा पकड़ा हुआ है और उसमें देखकर वो लिपस्टिक लगा रही है। उसने नीले रंग का ब्लाउज़ और पेटीकोट पहना हुआ था। जिसमें से चाची के बड़े-बड़े वक्ष ब्लाउज़ से दब रहे थे। अचानक चाची ने देखा कि नेहा उसके वक्षों को बड़े ध्यान से देख रही है।

"क्या देख रही है?" चाची ने अपने होंटों से लिपस्टिक को दबाते हुए पूछा। नेहा ने शरारत भरे स्वर में कहा-

"चाची चाचू आपके वक्षों की तारीफ़ करते हैं?" इतना सुन तो चाची का मुँह खुला का खुला रह गया-

"एक मिनट में यहाँ से चली जा नहीं तो थप्पड़ खा लेगी, चल जाकर तैयार हो, पता है न कीर्तन है। तेरी माँ को पता चल गया ना!" चाची की बात पूरी होने से पहले ही नेहा ने चाची के गाल चूम लिये और उसके वक्षों की तरफ़ इशारा करते हुए बोली-

"यू आर हॉट चाची.." और चाची को आँख मार कर कमरे में चली गयी। अब तारीफ़ किसे अच्छी नहीं लगती? चाची भी एक पल के लिए मुस्कुरायी और फिर से शीशे में देखकर अपने होटों पर लिपस्टिक लगाने लगी।

इधर नेहा जब कमरे में आयी तो देखा कि उसकी माँ पूजा का बैग पैक कर रही थी।

"ये देख इस तरफ़ तेरी सारी साड़ियाँ रखी हैं और इस तरफ़ ये तेरे नाइट सूट्स।" और पूजा भी किसी छोटे बच्चे की तरह हाँ में सर हिलाकर सब ध्यान से देख रही थी कि नेहा को देखकर उसकी माँ उस पर बरस पड़ी-

"आ गयीं महारानी। घर में इतना काम पड़ा है और इनके सैर सपाटे ही ख़त्म नहीं होते!"

नेहा- "माँ मुझे आज तक समझ नहीं आया कि मुझे देखकर तुम मुझ पर बरस क्यों पड़ती हो?"

माँ- "क्योंकि तेरी हरकतें ऐसी हैं। यहाँ इतने काम पड़े हैं। मैं मेहमानों को देखूँ या पूजा को?"

नेहा- "अच्छा आप जाकर मेहमानों को देखो मैं पूजा को देख लूँगी!"

माँ बड़बड़ाती हुई बाहर निकल गयी। नेहा ने देखा कि पूजा के लिए काफ़ी शौपिंग हुई थी। हर ड्रेस पे टैग लगा हुआ था। पूजा ने पैकिंग करते हुए नेहा से पूछ लिया-

"कहाँ ग़ायब थी तू?" नेहा ने एक पल के लिए पूजा को चौंका दिया-

"जीजा जी से मिलने गयी थी!"

पूजा- "क्या? पर क्यों?"

नेहा- "कमाल है जीजा हैं मेरे, मिल नहीं सकती?" पूजा के पास इस बात का जवाब नहीं था। नेहा बैड पर दोनों हाथों का सहारा लेकर बैठ गयी।

"जानना नहीं कि उन्होंने क्या कहा?"

पूजा- "नहीं!"

नेहा- "ठीक है तो फिर नहीं बताते कि जीजा जी ने क्या-क्या कहा? क्या-क्या किया?

पूजा- "क्या किया? मतलब क्या है तेरा?" नेहा ने शरारत भरी मुस्कान बिखरते हुए कहा-

"जब तुझे जानना ही नहीं तो फिर जाने दे!" अब पूजा के मन में उत्सुकता बढ़ रही थी कि अचानक दरवाज़ा, खुला चाची ने लगभग पूजा को खींचते हुए कहा-

"जल्दी चल बाहर, तेरी सास आयी.." कहते हुए वो पूजा को बाहर ले गयी।

नेहा वहाँ पड़े पूजा के कपड़ों को देख रही थी। उसने पूजा की ब्रा उठा ली, जो गुलाबी रंग की थी। मानो वो अब कल्पना कर रही थी कि प्रेम इस ब्रा को देखकर पूजा के वक्षों की तारीफ़ करेगा। अचानक वो ब्रा लेकर बाथरूम में घुस गयी। ख़ुद को शीशे में देखने लगी। उसके कानों में अभी भी प्रेम की आवाज़ पड़ रही थी, 'तुमने कभी अपने वक्षों को ग़ौर से देखा है? बहुत सुंदर हैं..' प्रेम की इन बातों को याद कर न जाने उसे क्या हुआ उसने फट से अपने ऊपर से अपनी कुर्ती उतार दी। उसने काले रंग की ब्रा पहनी हई थी। अब वो ध्यान से अपनी ब्रा कर हाथ फेर कर अपने वक्षों को देख रही थी। उसके कानों में प्रेम का स्वर बार-बार गूँज रहा था। वो अपनी ब्रा उतारकर अपने वक्षों को देखना चाहती थी, पर ये उसे क्या हुआ आज उसकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी, बल्कि मन में एक गुदगुदी- सी जो उसे ऐसा करने से रोक रही थी। फिर भी उसने हिम्मत की और अपनी ब्रा उतार कर फेंक दी और ख़ुद

ही अपने वक्षों को अपने हाथ से ढँक लिया। ये पहली बार तो नहीं था कि वो अपने वक्षों को देख रही थी। पर आज वो अपने वक्षों को प्रेम की नज़रों से देखने वाली थी। उसने धीरे-धीरे अपने हाथ अपने वक्षों से खिसका दिये। सही था प्रेम, उसने बिना देखे ही अंदाज़ा लगा लिया था कि उसके वक्ष एक दम तने हुए हैं। हाँ वो वर्जिन थी ये भी वो समझ गया था। न जाने आज उसे ऐसा क्यों लग रहा था कि वो अपने वक्षों को सहलाये। वो वैसा ही करने लगी। उसे ये क्रिया अच्छी लग रही थी। अचानक उसने पूजा की पिंक ब्रा उठायी और अपने वक्षों पर लगाकर ऐसे महसूस करने लगी, मानो यही एक तार हो जो प्रेम की छुवन को वक्षों से जोड़ेगी। पर वो वक्ष पूजा के होंगे। अभी वो इन अजीब से ख़यालों में गुम थी कि अचानक उसके पीछे बाथरूम का दरवाज़ा खुल गया। पीछे पूजा खड़ी थी। पूजा ये नज़ारा देखकर हैरान थी कि नेहा निर्वस्त्र अपने वक्षों को सहला रही थी और उसके हाथ उसकी ब्रा थी। पूजा को तो समझ ही नहीं आया कि वो नेहा से सवाल भी क्या पूछे-

"छी! क्या कर रही है तू, और ये मेरी ब्रा?"

नेहा- "नहीं कुछ नहीं पूजा, वो मैं तेरी ब्रा देख रही थी कि मुझ पर कैसी लगेगी!" पूजा ने नेहा के हाथ से अपनी ब्रा छीनते हुए कहा- "तेरा न इलाज करवाने वाला हो गया है। जल्दी तैयार होकर आ, वो लोग आ गये हैं। कीर्तन शुरू होने वाला है।" कहते हुए दरवाज़ा बंद करके चली गयी। अब नेहा बेबाक होकर अपने वक्षों को शीशे में देख रही थी। मानो उसे उन पर गर्व हो। उसे प्रेम की तारीफ़ पर यक़ीन हो चला था। पर वो ये क्या सोच रही थी। प्रेम उसका होने वाला जीजा था, उसकी बहन पूजा का होने वाला पति। उसने जल्दी फ़व्वारा खोला और उसके नीचे खड़ी हो गयी। अपने बदन पर ख़ास कर वक्षों पर हाथ से मल-मलकर पानी साफ़ किया, जैसे कि वो प्रेम के ख़यालों को मिटा देना चाहती हो।

उस शाम ग्राउंड में टेंट लगाकर माता का कीर्तन था। कीर्तन गाने के लिए अरविंदर सिंह की पार्टी आयी हुई थी। बेशक मेहमान कम थे, सिर्फ़ लड़के वाले और लड़की वाले ही थे। पर अरविंदर सिंह ने अपने परिचित अंदाज़ से समा बाँध दिया था। पूरे कीर्तन में प्रेम की नज़र नेहा की नज़रों से मिलने को बेताब थी पर नेहा ने उसकी तरफ़ नज़र ही नहीं की और इस बात को प्रेम ने ईगो पर ले लिया था। कीर्तन ख़त्म होने के बाद आरती हुई, जहाँ परम्परा अनुसार पूजा और प्रेम द्वारा आरती करवायी जा रही थी। इस पूरे फ़ंक्शन को प्रिय अपने कैमरे में क़ैद कर रही थी। वो शायद कैमरे के लेंस से देख पा रही थी कि प्रेम की नज़र नेहा पर है। इसीलिए तो जब आरती ख़त्म हुई और प्रेम नेहा से बात करना चाहता था, प्रिया ने प्रेम के कँधे पर हाथ रखकर उसे मुस्कुराते हुए कहा-

"प्रेम प्लीज़ इस वक़्त मुझे तुम्हारा थोड़ा टाइम चाहिए, पूजा के साथ थोड़ी फ़ोटो खिंचवा लो.." प्रेम ने भी मुस्कुराकर हामी भर दी और प्रिया उन दोनों को लेकर बाहर गार्डेन में चली गयी जहाँ प्रेम और पूजा का फ़ोटो शूट होने लगा। बेशक प्रेम प्रिया के कहने पर हर

पोज़ दे रहा था, उसकी आँखें पूजा पर थीं पर मन की आँखों से वो नेहा को ही देख रहा था। उस फ़ोटो शूट में सभी मौजूद थे, हर कोई अपने स्टाइल के पोज़ बता रहा था दोनों को।
ये सारा घटनाक्रम नेहा प्रदीप और दलबीर को गोवा के पुलिस स्टेशन में बता रही थी। प्रदीप ने देखा कि इन लम्हों को याद करके नेहा परेशान हो रही थी। नेहा ने कहा-

"मैं समझ गयी थी कि मैंने प्रेम की शिकायत किसी से नहीं लगायी तो उसका हौसला बढ़ गया था। अब वो रह-रहकर मुझसे अकेले में मिलने का मौक़ा तलाश करने लगा। जब कभी मौक़ा मिलता मुझे अकेले में पकड़ लेता। कभी मुझे हर जगह छूने की इजाज़त माँगता तो कभी किस करने की। इतना कि मैं डरने लगी थी।"

दलबीर- "ये बात तुमने घर में किसी को क्यों नहीं बतायी?"

नेहा- "क्या बताती? कि जीजा जी मेरे साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं? बवाल हो जाता। शादी सर पे थी। कुछ भी होता, मुझे ग़लत और प्रेम को सही ठहराकर मुझे चुप करवा दिया जाता। बस मैंने तय कर लिया था कि मैं अपने तरीक़े से इस बात को सोल्व करूँगी।"

प्रदीप- "तो फिर क्या किया तुमने?"

नेहा- "मैं समझ चुकी थी कि प्रेम मुझे पाने के लिए उतावला हो रहा है और अगर मैं प्रेम को ख़ुद के बजाए पूजा के नज़दीक ले आऊँ तो शायद प्रेम मुझे भूल जाये और मैं भी उस घटना को एक हादसा समझकर भूला दूँगी। मैंने तय कर लिया कि किसी भी तरह मैं पूजा को प्रेम के साथ अकेले में मिलने भेज दूँगी।"

उसके बाद जो नेहा ने बताया वो किसी फ़िल्मी मंज़र की तरह दलबीर और प्रदीप के सामने घूमने लगा। उस रात कोकटेल पार्टी और लेडीस संगीत का कार्यक्रम एक साथ रखा गया था। नीचे हॉल में औरतें बॉलीवुड के गानों पर थिरक रही थीं तो वहीं छत पर जेंट्स के लिए बार बन चुका था। नेहा ने देखा कि पूजा इन औरतों के बीच बोर हो रही है। वो पूजा को चुपचाप छत पर ले आयी। उसने देखा दूर मर्द शराब पी रहे हैं, उनके बीच में ही कहीं प्रेम भी होगा। नेहा पूजा को साइड में ले गयी। ये देख पूजा ने नेहा से पूछ लिया-

"तू मुझे यहाँ क्यों ले आयी है?"

नेहा- "जीजू से मिलवाने.."

पूजा- "क्यों?"

नेहा- "मिल के देख, कैसा है तेरा निर्णय, कितना सही है। मैं तो कहती हूँ आज ही अपनी वर्जिनिटी..." नेहा इतना ही कह पायी थी कि पूजा ने फिर से अपने कानों पर हाथ रख लिया।

"छी.. फिर से मत शुरू हो जाना नहीं सुननी मुझे कोई गंदी बात.." पूजा के कान से उँगली हटाते हुए नेहा ने कहा, "क्या छी? तो शादी क्यों कर रही है? अगर सेक्स नहीं करेगी तो बच्चे कैसे पैदा होंगे..?"

पूजा- " हाँ तो ये बातें कहने की थोड़े न होती हैं!" शर्माते हुए उसने कहा।

नेहा- "हाय मेरी बुलबुल.. आम चूसना भी है पर उसके रस से हाथ गंदे भी न हों!"

पूजा- "मतलब?"

नेहा- "मैं ना जीजू को हल्दी लगाने गयी थी... यार क्या बॉडी है उसकी! एक दम टाइट मसल्स। सच्ची पता है मैंने तो उसका पायजामा भी उतरवा दिया.."

पूजा- "पता चला मुझे, जो बेवक़ूफ़ी करके आयी तू वहाँ.. जा मैंने बात नहीं करनी तुझसे.." कहकर आधे मन से जाने को थी कि नेहा ने उसे रोकते हुए कहा-

"सुनना तो सब चाहती है तू है ना?.. अच्छा सुन.. पता है मैं तो बस ये देखना चाहती थी कि मेरी बहन की सिम सिम में प्रवेश करने वाले अलीबाबा का आकार क्या होगा। सच्ची मैंने न जब प्रेम की जाँघों पर हल्दी लगायी न... तो उसके जाँघिये में हरकत हुई! सच्च्ची!.. मैंने कहा नॉक-नॉक... उसने मुझसे पूछा कौन? मैंने कहा साली... एक बार सूरत तो दिखायो अली बाबा.. पता तो चले कि मेरी बहन की क़िस्मत में क्या है?" नेहा के मुँह से ऐसी बातें सुनकर पूजा बहुत हैरान थी।

पूजा- "हे राम... कहाँ से सीखती है तू ये सब बातें"

नेहा- "सब नेट पे है.. ये देख.." कहते हुए नेहा ने अपने मोबाइल पर एक पोर्न क्लिप चला दी। ये देख तो पूजा बस बेहोश ही होने वाली थी। उसने अपनी आँख बंद कर ली और वापस जाने लगी कि नेहा ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा-

"अच्छा सुन.. जीजू से मिलना है अकेले में?

पूजा- "अकेले में? क्यों? क्या बकवास किये जा रही है मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा!"

नेहा- "चल स्ट्रैट टॉक... हाँ? सेक्स करना है जीजू के साथ?"

पूजा- "छी...मैं जा रही हूँ.. तेरी तरह अपना दिमाग़ ख़राब नहीं कर सकती मैं!" कहते हुए पूजा निकल ही रही थी कि नेहा ने उसका रास्ता रोक लिया।

नेहा- "हर्ज ही क्या है? जो कल करना है सो आज क्यों नहीं!..पति है तेरा.."

पूजा- "अभी हुआ नहीं!"

नेहा- "तो तुझे डाउट है कि कल तुझसे शादी नहीं करेगा?"

पूजा- "नहीं...मतलब हाँ.. मतलब.. नहीं.. नेहा शादी से पहले ये सब ठीक नहीं है!"

नेहा- "इसका मज़ा ही कुछ और होता है पूजा... सच्ची बोल रही हूँ याद करेगी ज़िन्दगी भर मुझे..रुक...." पूजा कुछ बोल पाती कि उसने देखा एक लड़का सोनू जो उनकी बुआ का बेटा था, एक ट्रे में बर्फ़, सोडा और पानी लेकर जा रहा है। उसे देख नेहा ने सीटी मारी। सोनू मुड़ा और नेहा ने उसे इशारे से उसे अपनी और बुलवाया।

सोनू- "हाँ नेहा दीदी कुछ चाहिए?"

नेहा- "ये सब कहाँ लेके जा रहा है?"

सोनू- "वो वहाँ दूसरी तरफ़ सभी अंकल लोग बैठे हैं न!"

नेहा- "सुन सोनू एक पऊआ मिलेगा?"

सोनू- "पऊआ नहीं, अधिया है.. ये मेरी बायीं जेब में, निकल लो!" पूजा तो शर्म से पानी-पानी हो रही थी कि नेहा कैसे किसी गली के गुंडे की तरह सीटी मारकर उसके कज़न से शराब माँग रही थी।

नेहा ने सोनू की जेब से एक अधिया निकला, पानी की एक बोतल और दो गिलास ट्रे से उठाये और सोनू को जाने के लिए कहा।

पूजा- "क्या कर रही है तू? वो सबको बता देगा!" नेहा ने फिर सीटी मारी सोनू पलटा-

नेहा- "ऐ सोनू... ये बात किसी को बताना नहीं!" सोनू भी स्मार्ट था, "मैं आपको जानता ही नहीं!.." कहकर हँसता हुआ चला गया।

नेहा- "ये हैं आज की जैनरेशन.. चल आ जा.." कहते हुए पूजा का हाथ पकड़ते हुए किसी अँधेरे कोने में ले गयी। उसने दो गिलास में दो पैग बनाये, पानी डाला। पूजा देख रही थी कि नेहा को तो पैग बनाने भी आते हैं। नेहा ने पूजा को उसका गिलास पकड़ाते हुए कहा-

"गटक जा.."

पूजा- "नहीं, मैं नहीं पीती!.. मतलब कभी पी नहीं.. मुझसे नहीं पी जायेगी सच्ची नेहा.."

नेहा- "ओके चल खड़ी हो अभी पापा से जा के बोल दे कि तू ये शादी नहीं कर रही, चल खड़ी हो!" पूजा नेहा की इस हरकत पर हैरान थी कि शराब न पीने से उसकी शादी का क्या तअल्लुक़ है? पूजा की आँख में सवाल पढ़ते हुए नेहा ने कहा-

"शादी के बाद जीजा जी तेरे साथ सेक्स करेंगे और तू उन्हें यही कहने वाली है न? ना ना.. जी मैंने ये सब पहले नहीं किया... मुझसे नहीं हो पायेगा ...सच्ची!" मुँह बनाते हुए वो पूजा की नक़ल उतार रही थी। पूजा जानती थी कि नेहा उसे पिलाये बिना मानेगी नहीं। उसने एक हाथ से अपना नाक पकड़ा और किसी कड़वी दवा की तरह उसने सारा गिलास एक ही घूँट में ख़ाली कर दिया। नेहा के चेहरे पर एक जीत भरी मुस्कान थी।

लड़के वालों की तरफ़ अब प्रेम अपने दोस्तों और कज़ंस के साथ बियर पी रहा था। सभी प्रेम को एक सुखद गृहस्थ जीवन की नसीहत दे रहे थे। कुल मिलाकर वो ख़ुद को एक जोकर महसूस कर रहा था। जैसे कि दुल्हे का तो मज़ाक़ उड़ने का हक़ हर एक को होता है। पूरी छत एक मिनी बार में बदल चुकी थी। जगह-जगह लोग छोटे-छोटे झुण्ड बनाकर व्हिस्की और बीयर पी रहे थे और एक ढोल वाला पंजाबी बोलियों के साथ सबको नचा रहा था। ज़्यादातर लोगों को चढ़ चुकी थी। सबके बेढंगे डांस इस बात का प्रमाण थे और प्रिया यह मोमेंट्स अपने कैमरे में क़ैद कर रही थी कि प्रेम के एक दोस्त ने प्रिया को आवाज़ लगते हुए कहा-